International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कुशल गृह प्रबन्ध में गृहिणी की भूमिका

अन्जू सनगत
(शोध छात्रा) ए (गृह विज्ञान)

सारांश –

परिवार व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण व प्रथम पाठशाला होती है। और इस परिवार रूपी संस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी गृहस्वामिनी ग्रहिणी होती है। गृह प्रबन्धक एक महत्वपूर्ण कला है। यह एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसे कार्यरूप देने में गृहिणी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एक कुशल गृहिणी परिवार के सभी साधनो का उपयोग परिवार के सदस्यो की संतुष्टि और अधिकतम लाभ के लिए किया जाता है। पारिवारिक जीवन को सूदृढ़ बनाने मे ग्रहिणी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो घर के अंदर निरन्तर चलती रहती है। गृहिणी की कार्य कुशलता और निपुणता गृह प्रबन्ध की प्रमुख कसौटी है। प्रस्तुत आलेख में कुशल ग्रह प्रबन्ध में गृहिणी की भूमिका का अध्ययन प्रस्तावित है।

गृह की परिभाषा :–

गृह से तात्पर्य ऐसे स्थान से है जहां रक्त सम्बन्धी एक ही स्थान पर प्रेम पूर्वक रहते है। गृह में रहकर व्यक्ति को सुखद पारिवारिक वातावरण, शान्ति

व सूकून की अनुभूति होती है। जीवन में सुख और दुःख दोनो पहल होती है परन्तु पारिवारिक सहयोग और आपसी सद्भावना दुःख को भी सुख मे बदल देती है। परस्पर सहयोग के घर के सदस्य कर्मनिष्ठ बनते है उनका शारीरिक, मानसिक, बोद्विक सामाजिक व सांस्कृतिक विकास अच्छी तरह से होता है। परिवार के सदस्य अपने चरम लक्ष्य को गृह के सुखद वातावरण में रहकर ही प्राप्त करते है। वर्तमान समय मे स्त्री और पुरूष दोनो कामकाजी होते है वे आपसी सहयोग व सामजस्य रखकर गृह व्यवस्था को सुचारू रूप मे चलाते है। गृह का सुखद वातावरण एक कुशल गृहिणी की बड़ी जीत होती है। ऐसे सुखद वातावरण मे व्यक्ति अच्छे नागरिक और समाज के कर्णधार होते है।

प्रबन्धन प्रक्रिया –

प्रबन्धन एक कला है। कला का अर्थ है कार्य को सौन्दर्य पूर्ण तरिके से करना। किसी कार्य को करने के लिए बोद्विक क्षमता भी आवश्यक है। प्रबन्धन एक आदर्श मानसिक प्रक्रिया है। प्राचीन समय से ही गृहिणी कुशलतापूर्वक गृह प्रबन्धन करती आ रही है। वर्तमान समय में कामकाजी महिलाओं के लिए भी अच्छा प्रबन्धन एक बड़ी चुनौती बन गया है। एक कुशल गृहिणी सीमित समय में समिति साधनों का उपयोग करके कुशल गृह प्रबन्धन करती है। प्रबन्धन प्रक्रिया सही ना होने से परिवारों का विघटन हो जाता है।

3

गृह प्रबन्धन या गृह व्यवस्था –

कुशल गृह प्रबन्धन में गृहिणी की सक्रिय भूमिका रहती है। प्रबन्धन की प्रक्रिया जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होती है। और गृह प्रबन्धन कि प्रक्रिया का मुख्य लक्ष्य पारिवारिक लक्ष्यो व उद्देश्यो को प्राप्त करना है। निर्कल एवं डार्सी कहते है कि गृह प्रबन्ध पारिवारिक साधनो के नियोजन नियत्रंण एवं मूल्यांकन की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। उपलब्ध सीमित साधनों द्वारा किसी भी परिस्थिति में सर्वोत्तम ढंग से उपयोग हो सके और घर के सदस्य अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। प्रबन्धन एक मानसिक प्रक्रिया है। गृह प्रबन्धन एक सहज कार्य नही है। इसके लिए यह आवश्यक है कि कार्यो को सुव्यवस्थित ढंग से किया जाये और विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक सावधानी बरती जाये। एक कुशल गृहिणी पारिवारिक साधनों के उचित प्रयोग द्वारा कम समय में ही गृह प्रबन्धन कि प्रक्रिया में सुचारू रूप से आयोजन, नियंत्रण एक मूल्यांकन को स्थापित करती है। कुशल गृह प्रबन्ध परिवार की सुख समृद्वि व उन्नति की पहचान बन जाता है। गृह का अस्तित्व एक कुशल गृहिणी की सूझबूझ व कार्य कुशलता पर निर्भर करता है। गृहिणियों की कुशलता समायोजन और सन्तुलन की धुरी पर टिकी होती है। एक कुशल गृहिणी को पता होता है कि किस परिस्थिति में किस तरह से गृह प्रबन्धन सुचारू रूप से करना है। परिवार में बजट बनाकर

4

सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना जैसे पुस्तके, कपड़े, खिलौने, कम मूल्य में उचित पोषण तत्वो की व्यवस्था करना, दवाईयों पर खर्च आदि के लिए प्रबन्धन एक कुशल गृहिणी के लिए आसान होता है। परिवार के किसी सदस्य कि क्या आवश्यकता है कैसे पूरी की जा सकती है यह एक कुशल गृहिणी को पता होता है। गृह प्रबन्धन की सफलता एक कुशल गृहिणी पर निर्भर करती है।

आलेख की रूपरेखा :–

प्रस्तुत अध्ययन में कुशल गृह प्रबन्ध में गृहिणी की भूमिका का विश्लेषण और विवेचन किया गया है। एक कुशल गृहिणी किस प्रकार से अपने दायित्वो का निर्वहन करती है यह इसका मुख्य विषय है। गृह व्यवस्था के कुशल संचालन में गृहिणी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। गृह व्यवस्था का सफल संचालन एक कुशल गृहिणी ही कर सकती है। गृह प्रबन्धन मे गृहिणी एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ होती है। प्रस्तुत अध्ययन में सूचनाओं और तथ्यों का संकलन मुख्यतः द्वितीय स्त्रोत से किया गया है। प्रतिष्ठित शैधा प्रतिभाओ और महत्वपूर्ण आलेखो और अनेक गृन्थो से प्राप्त तथ्यों को इस अध्ययन में क्रमबद्व रूप से प्रस्तुत किया गया है।

गृहिणी की कुशलता गृह प्रबन्धन की व्यवस्था को उचित प्रक्रिया से संचालित करने में प्रदर्शित होती है। कुशल गृह प्रबन्धन में परिवार के सभी

5

सदस्यों को आत्मिक, शारीरिक व मानसिक सुख की प्राप्ति होती है। व्यक्ति उन्नति की तरफ अग्रसर होते है। इस गृह प्रबन्धन की व्यवस्था में सभी सदस्यों का आपसी सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। एक कुशल गृह प्रबन्धन में व्यक्ति को सभी कार्यो की समाप्ति पर संतुष्टि की प्राप्ति होती है।

स्त्रोत :–

1. डा. वृंदा सिंह गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर।
2. शर्मा अनुपम तथा वार्षणेय संगीताः इक्कीसवी शताब्दी में महिला समस्याएँ एवं सम्भावनाऐ अल्फा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
3. सिंह वी.एन. आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण एव रावत पब्लिकेशन जयपुर।